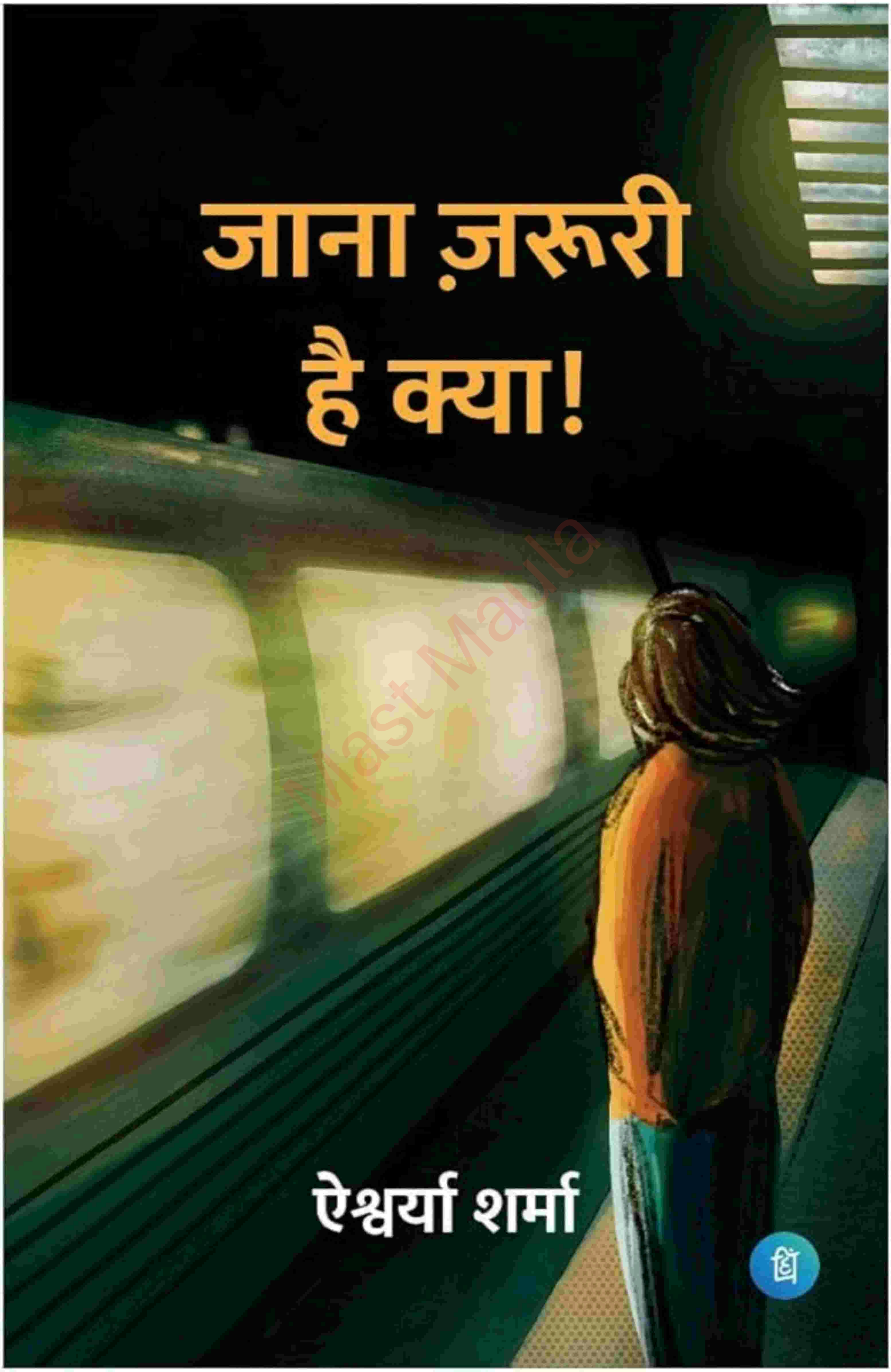

जाना ज़रूरी
है क्या!
ऐश्वर्या शर्मा

उन सभी लोगों के लिए, जिनके हिस्से अनगिनत भावनाएँ आईं, पर ना मिल पाया अवसर, कभी उन्हें व्यक्त कर पाने का।

भूमिका

उतना कभी किसी को नहीं मिलता जितने की चाह होती है लेकिन उतना हर बार बच जाता है जितने के साथ जीवन जिया जा सके। जो बचा, जो जिया. जो जीना बाक़ी है. जिसमें प्रतीक्षा छिपी है, जहाँ प्रेम का वास है, जहाँ जीवन की हर भावना और विभिन्न पहलू शामिल हैं. जिस क्षण जीवन का अर्थ समझा, जहाँ खुद को निरर्थक पाया और ना जाने ऐसी कितनी ही बातें जिनका जब निचोड़ निकाला गया तो बनी ना जाने कितनी ही कविताएँ।

लगभग चार-पाँच बरस पहले अपने आप को अलग-अलग प्रवृत्ति की भावनाओं में जब जकड़ा हुआ पाया तब लिखना शुरू कर खुद को भीतर से खाली करना शुरू कर दिया। जहाँ पहले मन में अलग-अलग तरह के विचारों का घेराव था। अब वहाँ वसन्त में खिले फूलों सी ऊर्जा का निवास है। कुछ समय पश्चात जब लिखने के साथ, आप सभी के साथ इसे बांटना शुरू किया तो जाना कि हम सबके सुख-दु:ख, हीन भावना, ईर्ष्या, प्रेमभाव आदि भावनाएँ लगभग एक जैसी ही होती हैं। बस इन तक पहुँचने का हमारा माध्यम अलग-अलग है। आप सभी ने जब मेरे लेखन को अपने दैनिक जीवन के उत एक क्षण में जगह दी और सराहा, तब मैंने जाना कि जो जैसा है उसे ठीक वैसा महसूस करना, ठीक-ठीक वैसा ही कह पाना दोनों अलग बातें हैं। किसी को ये कहने और दर्शाने का अवसर मिलता है तो किसी को इसे पढ़ने का। हमारे रहने के लिए जगह मिलना शायद आसान है, परन्तु हमारे जिये हुए के लिए जगह मिलना बहुत बड़ी बात है। मुझे अपनी भावनाओं को किताब की शक्ल देने का अवसर मिला है। लगभग दो बरस पहले ये सोचा नहीं था कि मेरे लिखे को डायरी, मोबाइल का नोटपैड, सोशल मीडिया के अतिरिक्त भी कोई जगह मिलेगी। मुझे आज ये जगह मिल चुकी है।

ये किताब उन सभी लोगों के दिलों तक पहुँचने का प्रयास है जिनके जीवन के किसी एक हिस्से में एक वस्तु, व्यक्ति, जगह आदि की प्रतीक्षा, घात लगाए बैठी

रहती है। जहाँ उन्हें ज़रूरत है किसी के लौट आने की या ख़ुद कहीं तक पहुँच जाने की। अगर यह उनकी जीवनशैली के किसी रोज़, एक कोने में क्षण भर अपनी टेक लगा पाए या इन कविताओं की किसी एक पंक्ति में वे स्वयं को प्रतीक्षारत ढूँढ पाए तो मैं समझेंगी मेरा लेखन सदा के लिए सार्थक हो गया है।

इसे लिखते हुए दिल की धड़कन तेज़ है, हाथ काँप रहे हैं। मन उत्सुकता से भरा है और चेहरे पर खुशी है। इस भावना को महसूस करते हुए अपना जिया हुआ, देखा हुआ, महसूस किया हुआ कविताओं के रूप में आप सबको सौंप रही हूँ। अंत में अपनी बात को विराम देने के साथ बस ये कहना चाहूँगी कि मंजिल तक पहुँचने के लिए यात्रा की ओर पहला कदम हमें ही बढ़ाना होगा। ये किताब मेरा पहला कदम है। और यहाँ से मेरी यात्रा आरम्भ हो चुकी है।

ऐश्वर्या शर्मा

और मेरा यहाँ रुकना तो तब अच्छा लगेगा ना जब मैं कहूँ मुझे जाना है और तुम पूछो-"जाना ज़रूरी है क्या...!!"

तुम भी लौटना

पीछे छूटते शहर से
मैंने कभी अपना सारा सामान साथ नहीं लिया।

पीछे छूटते लोगों से
मैंने कभी उन्हें दिया हुआ समय नहीं माँगा।

अपने बिछड़े हुए प्रेम के पास
मैंने अपना एक हिस्सा वहीं छोड़ दिया।

क्योंकि मेरी नज़र में पीछे कुछ तो छूटा रह जाना चाहिए दोबारा फिर वहीं लौट आने के लिए।

तुम भी लौटना
यहीं रुक जाने के लिए।

प्रेम की स्थिरता

झरने नहीं रहते कभी स्थिर बने हुए
क्योंकि बहना, उनका स्वभाव है।

ठीक जैसे पहाड़ों को नहीं आता
अपनी जटिलताएँ त्याग देना

मैं दूर से ये देख कर मुस्कुराती हूँ कि
कैसे निराश होने पर कोई नकार देता है
अपने अंदर का सारा का सारा प्रेम।

जबकि स्वाभाविक है
मानव जीवन में
प्रेम का निरंतर स्थिर बने रहना।

सबसे बरबाद पीढ़ी

यदि भविष्य में
हमारा मस्तिष्क खोज रहा होगा युद्ध का विकल्प कभी।
प्रेम के उपरान्त,
युद्ध का विकल्प कभी

उस क्षण हम उदाहरण होंगे
मानव सभ्यता की
सबसे बरबाद पीढ़ी के।

दूसरा व्यक्ति

लगभग हम सभी को
एक दूसरा व्यक्ति चाहिए होता है।

जिसके आगे बाँट सकें
हम अपने सबसे निजी दुःख,
बिना इस डर के कि उसके मन में बनी
हमारी सुखद प्रतिमा को
कोई नुकसान पहुँचेगा।

शायद सबको नहीं मिलता
ये दूसरा व्यक्ति।

पर हम सभी शायद बन सकते हैं
किसी के जीवन का ये दूसरा व्यक्ति।

प्रेम

अचानक किसी हादसे में
मर जाने जैसा होता होगा
प्रेम को अपने जीवन से
बिल्कुल पृथक कर देना।

हिसाब में कच्चे लोग

माँ को, हिसाब करना नहीं आता
पूछने पर भी वह
अपने दु:ख आधे ही बताती है।

पिताजी गणितज्ञ नहीं हैं
हम पर हमेशा ज़रूरत से
अधिक ख़र्च करते हैं।

इन हिसाब में कच्चे लोगों से मैंने सीखा
अपनों के आगे
दु:ख आधे और खुशियाँ दोगुनी करना।

मित्रता

जो अपनी मौजूदगी में
तुम्हें खुद से मिलते रहने की स्वतंत्रता दे।

जिसके सुनने से
तुम्हारा कहा गया व्यर्थ ना हो।

जिसके पास साहस हो
तुम्हारे ग़लत को ग़लत ठहराने का।

उस व्यक्ति की मित्रता
तुम्हारे जीवन रथ की सारथी है।

मुम्बई

कुछ लोग याद रखते हैं
किसी भी जगह को
वहाँ बने स्मारक, इमारत या
किसी दृश्य के लिए।

कुछ लोग याद रखते हैं
उस जगह को
क्योंकि वहाँ रहता है
उनका कोई अपना
या घटी, किसी घटना के लिए।
किसी जगह को मात्र
उसकी प्रसिद्धि के लिए याद रखना
कितनी छोटी बात है ना
मुम्बई का नाम सुनते ही
पहले मुझे तुम याद आते हो
और बाद में समंदर

तुम्हारे नाम का कोना

शेल्फ पर रखी बंद किताबें
उनमें रखे सूखे फूल
तुम पर लिखी कुछ कविताएँ
बंद ख़तों पर जमीं धूल ।

तुम्हारी भेजी प्लेलिस्ट के गाने
एक-आध तुम्हारे झूठे बहाने ।

हमारी साथ की कुछ तस्वीरें
मेरे हाथ में तुम्हारे ना होने की लकीरें।

बस इतने सबसे भरा है
मैंने तुम्हारे नाम का हर एक कोना।

फिर चाहे हमारा अलग-अलग शहर होना
या हो तुम्हारा मेरे
जीवन में ही ना होना।

तुम नहीं भी आओगे

तुम नहीं भी आओगे, मेरे हिस्से
तब भी एक रोज़ आ ही जाएगा
तुम्हारे शहर की ओर
आने का कोई आमंत्रण।
तुम्हारे नाम के नए लोग मेरे जीवन में।
और शायद तुम-सा ही हाल पूछता
कोई नया व्यक्ति।

हाँ, तुम्हारे अलावा
यदि नहीं आएगा
कोई मेरे हिस्से
वह व्यक्ति जो था
कभी सिर्फ़ तुम्हारे आगे।

जिनका ज़िक्र फिर केवल बातों में ही रह जाता है उनसे और एक बार मिलने की इच्छा हमेशा बची रहती है।

मरने से पहले

मरने से पहले
कम से कम
एक बार
हम सभी को लौटना चाहिए
हर उस जगह पर
जहाँ छोड़ आए थे
हम अपना कोई साथी।

कोई चीज़
कोई क़िस्सा या हमारा
अपना ही कोई हिस्सा।

हर उन गली-कूचों में
एक अंतिम बार लौटना चाहिए।
जिन्होंने हमारा बचपन
अपने अंदर समेटा हुआ है।
उस पुराने घर में भी लौटना
जो अब खंडहर हो चुका है।
हम सभी को लौटना चाहिए
एक और बार हर उस जगह
जहाँ से विदा लेते समय

हम सौंप आते हैं खुद को।
हर बार थोड़ा-थोड़ा।
अच्छा सुनो,
तुम भी लौट आना एक अंतिम बार मिलने मुझसे।
जब समय मेरे जीवन में
बहुत कम शेष हो।

कैलेंडर

एक दशक पूरा होने में
सदी लगने लगती है।
 एक माह बीतने में
बरस लगने लगता है।
एक हफ़्ता
महीने सा लगता है।
और एक दिन भी महीना लगने लगता है।

एक व्यक्ति का कैलेंडर
इसी तरह बिगड़ता है।
जब वह किसी की
असीमित प्रतीक्षा में होता है।

ऐसे लोग

जो लोग पुकारे नहीं गए
जिनसे प्रेम नहीं किया गया।
जिनकी नौकरी कोई और खा गया।
जिनके हिस्से की चादर में
किसी और के पाँव पड़े।
जिनके ख़तों का जवाब नहीं भेजा गया।
और नहीं उठाया गया जिनका फ़ोन
ज़रूरत पड़ने पर।

वे लोग नहीं पुकारते
फिर खुद किसी को।
प्रेम से छुड़ा लेते है
अपना हाथ।

दफ़्तर में भी फिर उन्हें
सत्ता लगने लगती है।
नहीं पसारते पाँव
फिर चादर बड़ी होने पर भी।
भूल जाते हैं
किसी को ख़त लिखना
फिर नहीं मिलाते
वे कोई फ़ोन

कॉन्टैक्ट लिस्ट के
सबसे ज़रूरी नंबर पर।
ऐसे लोग डर जाते हैं
फिर सदा के लिए
इन सभी ज़रूरी बातों से।

विकल्प

इस दुनिया में बना जा सकता है
सबसे तेज धावक

चढ़ा जा सकता है
 ऊँचे से पहाड

बनवा सकता है
कोई स्मारक किसी का

कर सकता है कोई भी प्रदर्शन
खुले आम सड़कों पर

पर मुझे इतनी तेज भी नहीं भागना कि
साथ चलने वाले मुझसे थक जाएँ।
इतनी ऊँचाई पर भी नहीं चढ़ना कि
 वहाँ से अपना घर भी ना देख सकूँ।
स्मारक बनवाने के बजाय
मुझे साथ तस्वीरें लेना अधिक प्रिय है।
प्रदर्शन इस तरह भी नहीं करना कि
 जिसके लिए हो उसके अलावा सब देखें।

मेरा मानना है कि
इस दुनिया में हम
सब कुछ कर सकते हैं।

पर किसी के साथ चलने,
घर लौटने, तस्वीरें लेने
और किसी एक से सब कुछ
कह देने का विकल्प
हमारे पास हमेशा बचा रहना चाहिए

तुम तक

कभी-कभी मन होता है
पूरी दुनिया घूम लेने का।
फिर अंत में तुम्हारी पीठ के सहारे
अपनी पीठ लगा कर बैठ बैठ जाने का।

ये सारी दुनिया
घूम लेने तक

तुम्हारी शर्ट का
टूटा बटन लगाने तक

तुम्हारे साथ शाम की
चाय पीने तक

तुम्हारे आगे अपना बचपन
सुनाने तक

पूरा का पूरा तुम्हारे साथ
जी लेने तक।

सच कहूँ तो
इतना सफर करते हुए
थकने के बाद यदि
फिर भी अंत में मुझे
कहीं पहुँचना है तो वो केवल
तुम तक।

प्रेम में ठहराव

तपते रेगिस्तान में धरा खोजते हुए
हाथ भी जलाए और पाँव भी।

यानी खोज पानी की भी थी
केवल धरा की नहीं।

जीवन में प्रेम खोजते हुए
घाव भी उभारे
और तराशी नई पीड़ा भी।

यानी खोज प्रेम में
ठहराव की भी थी
मात्र प्रेम की ही नहीं।

नब्बे दशक से लोग

मुझे अक्सर याद रहते हैं वो लोग

जो भेंट करते हैं किसी को किताबें
जो पूछ लेते हैं किसी अज़नबी से हाल
जो मुस्कुराते हैं खेलते बच्चों को देख
जो रखते हैं ख़त भेजने का ख़्याल

जो रहते हैं वसन्त की प्रतीक्षा में
जो सुनते हैं किशोर-दा और रफ़ी के गाने
जो पढ़ते हैं फैज़ की नज़्में
जो देते हैं फिर प्रेम की मिसालें

जिनसे मिल कर हो जाता है दिन गुलज़ार
जो जानते हैं फ़राज़ की बातों के मायने
जो रखते हैं फूल, तस्वीरें और ख़त संभाल कर
जो जानते हैं गले लगना फिर किसी से मिल कर

मुझे अक्सर याद रहते हैं वो लोग
जो मिलते हैं इक्कीसवीं सदी में नब्बे दशक से बन कर।

जीवन के रंगमंच में

रंगमंच पर चल रहे
किसी नाटक सी इस दुनिया में

कुछ लोग हमारे जीवन में
परदा गिरने के बाद वाली
सच्चाई से होते हैं।

कैसी विडंबना है ये

तन चोटिल होकर भी
उतनी पीड़ा नहीं देता
जितनी पीड़ा देता है
एक चोटिल मन।

खाली गला भरा जा सकता है
हार पहना कर
जबकि भरा गला उमड़ता है
फिर आँखों के रास्ते।

खिड़की से लौटता दिख जाता है
गया हुआ व्यक्ति
जबकि जा चुका व्यक्ति
फिर दरवाज़े से भी नहीं दिखता।

एक पूरा शहर देखा जा सकता है
फिर एक व्यक्ति से मिलकर
जबकि पूरा शहर देख कर भी
वह व्यक्ति नहीं मिलता
फिर जुदा होने पर।

कैसी विडंबना है ये
कैसा पक्षपात भी
इसी प्रत्यक्ष और
अप्रत्यक्ष के बीच झूल कर
हम गुज़ार देते हैं अपनी पूरी
ज़िंदगी बस यूँ ही।

उलझन

रेलगाड़ी की घोषणा सुनते ही
तुम्हें जल्दी थी जाने की।
और मुझे जल्दी थी
तुम्हें देरी करवाने की।

इन्हीं सब उलझन में
हमें अपनी-अपनी उदासी
दिख रही थी।

तुम्हें अपनी मंज़िल
दूर जाती दिख रही थी
मुझे अपनी मंज़िल
दूर जाती दिख रही थी।

जब हम प्रेम में होते हैं तब गीत पहले से अधिक गुनगुनाते हैं इसमें धुन, प्रेम बनता है और हम फिर प्रेमी को गाने लगते हैं।

अचानक

अचानक कुछ नहीं घटता
ऐसा कभी नहीं होता कि
एक परिणाम
अचानक यूँ ही तुम पर
थोप दिया जाए
अचानक कोई तुमसे
बातचीत बंद कर दे।

प्रेम करने वाले लोग
अचानक तुमसे घृणा करने लगे।

तुम अपनी कहानी में
नायक की जगह
अचानक खलनायक बन जाओ।

ये अचानक
इतना अचानक भी नहीं होता
इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं
जो इस अचानक की ओट में बैठे
धीरे-धीरे सरक रहे होते हैं।

अचानक कुछ नहीं घटता
सिवाय मृत्यु के
और मृत्यु एक अपवाद है।

वर्तमान की स्मृतियाँ

हमने एक साथ
इस शहर की
कई गलियाँ नापी।

बैठे कई पार्क की
बेंचों पर एक साथ।

हमने देखी एक साथ
कई हिंदी फिल्में।
पढ़ी कई प्रेम कविताएँ एक साथ।

हमने एक साथ
कई तस्वीरें भी बटोरी।
सुने एक इयरफोन से प्रेम-गीत एक साथ।
हमने बनाई पगडंडियाँ
दुनिया से अलग हटकर
हम चले उन पगडंडियों पर
हाथ पकड़े, एक साथ।

हम दोनों जानते थे
ये साथ भविष्य में
शायद नहीं रहेगा एक साथ।

फिर भी हमने चुना
वर्तमान का सारा समय
एक-दूसरे के साथ।

और आज में जीते हुए
हमने जाना कि
भविष्य का एक हिस्सा
वर्तमान की स्मृतियों से अ कुछ नहीं।

हमने चुना भविष्य भविष्य के लिए
स्मृतियाँ बनाना
वर्तमान में एक साथ।

मृत्यु-अचूक सत्य

मृत्यु नहीं देखेगी आपकी उम्र क्या है
ना ही देखेगी कि आप
किस जाति या धर्म से जुड़े हुए हैं।

उसे इस बात से भी फ़र्क नहीं पड़ेगा
कि आप किस पद पर विराजमान हैं।
यह तो उसे बिल्कुल नहीं मालूम होगा
कि आपने कितनी दौलत कमाई।
और ना ही उसे यह पता होगा
कि आप अब तक कितना खुलकर जिये हैं।

उसे आना है वह आएगी
तो किस बात पर हम घमंड कर रहे हैं।
बेहतर ये होगा कि हम जान लें
मृत्यु, जीवन का अचूक सत्य है।

जिसके सच होने का समय
निर्धारित नहीं है।

ईश्वर का थैला

छाने हर गली कूचे,
शहर और मकान कई
जहाँ रुका जाए कहीं
थक कर चैन से, वो जगह
कभी कहीं मिली ही नहीं।

समय के एक सिरे से
अतीत के नग्न तार बंधे हैं।
जिन्हें मात्र छूने भर से
सभी यादों का फ्लैशबैक
घेर लेता है मुझे।

और दूसरे सिरे पर
ईश्वर का थैला बंधा है
जिसमें भविष्य की रेत पड़ी है
जो कि सारी की सारी
एक बार में नहीं छुई जा सकती।

ईश्वर समय-समय पर अपने अनुसार
इसे थोड़ी-थोड़ी मुझ तक पहुँचा रहा है।

पिछला सिरा छूते ही
इलेक्ट्रिक शॉक जैसा झटका
अचानक मन में दौड़ता है
जो शरीर को क्षति पहुँचाने की बजाय

सीधा मन पर हावी हो बैठता है।

हावी इसलिए होता है क्योंकि
उसके कुछ हिस्सों में
"काश" उन पर अपनी टेक लगाए बैठा है।

"काश ये न होता तो ये हो जाता"
"ऐसा न करता तो ये कर जाता।"

इस तार पर न जाने
ऐसे कितने ही काश बंधे हैं।
जिनमें कुछ अधूरा-सा इनसे चिपका ज़रूर है।

इस तार के दोनों सिरे छुए बिना
इसे बीच से पकड़ कर चलते हुए
मालूम होता है कि इस तार का
पकड़ा हुआ हिस्सा ही तो वर्तमान है
जिसे साथ लिए चलना है।
या ये कहें कि जिसके सहारे
हमें आगे भविष्य की रेत तक जाना है।

भाग कर एक ही बार में
इस तक पहुँचा भी नहीं जा सकता
आखिरकार ये रेत भविष्य की जो है,
तो ये थैला हर बार मुझसे आगे ही रहेगा।

इस तरह चलते हुए होती है कई बार कि
पीछे पड़े सिरे पर कई दफ़ा हाथ पड़ जाता है
जो फिर से अपनी छाप छोड़ देता है
पर फिर याद आता है चलते भी तो जाना है।

चलते जा रहे हैं
कई बार पिछले सिरे पर
हाथ खुद ही दे मारते हैं
रेत उड़ती जा रही है।
थैला हर दिन हल्का होता जा रहा है

चलते-चलते पाँव दुखने
कोई बहाना नहीं चलेगा।
वर्तमान है जीने के लिए
अतीत था सहने के लिए
और भविष्य होगा संभालने के लिए।

कलाकार की कला

जीवन की सबसे बड़ी
त्रासदियों में से एक है।

दुनिया के बाद
खुद कलाकार का
अपनी कलाक
निरर्थक मान
उसे त्याग देना।

सोम, मंगल, बुध जीवन

मैं जीवन भर केवल
त्योहारों की प्रतीक्षा में रहा।
जब सभी साथ बैठेंगे
हँसेंगे, बोलेंगे।

लोग कुछ देर रुके
फिर चले गए।
जिसकी प्रतीक्षा थी
वो त्योहार भी आया और चला गया।

मैं वहीं का, वहीं रह गया
नितांत अकेला।
अब महसूस होता है कि
इतवार की प्रतीक्षा में
जीवन, बस सोम-मंगल-बुध
इत्यादि ही बना बैठा है।

अप्रत्याशित घटनाएँ

अप्रत्याशित समय पर
घटती घटनाएँ
सदा अचंभित करती हैं।

जैसे जेठ में मावठ का होना
जैसे रेलगाड़ी का तय समय से पहले
प्लेटफार्म पर आना
जैसे लम्बे इन्तज़ार के बाद किसी का ख़त आना
जैसे किसी पुराने बक्से में
बचपन की कोई तस्वीर मिलना।

जैसे उस रोज़ तुम्हारा
कई सालों बाद मुझसे मिलना।

अब तुम अचानक यूँ मिल जाओगे
तो अचंभा ही होगा नाही
जैसे मिल जाता है, किसी बच्चे को
उसके जन्मदिन पर कोई मनपसंद तोहफ़ा।

एक ऐसा व्यक्ति

ज्यादा नहीं बस
इतना समय हमारे पास
ज़रूर होना चाहिए कि हम दे सकें,
तोहफ़े में किताबें, किसी को ।

सजा सकें,
उसके बालों में कोई फूल।
रख सकें,
उसके ख़त संभाल कर।

टहल सकें,
बगीचे में जिसके साथ नंगे पाँव।
कर सकें,
उसे फ़ोन दिल भारी होने पर।

टिका सकें,
बेहिचक जिसके कंधे पर अपना सर।
ले सकें जिसके साथ कुछ उटपटांग तस्वीरें।

ज्यादा भी नहीं
लेकिन एक ऐसा व्यक्ति
सबके हिस्से ज़रूर आना चाहिए

जिसके आगे बन सकें
जैसा भी हम बनना चाहें

तुम्हारा जाना

मेरे हिस्से कभी नहीं आए
वो तमाम दरवाज़े जिन्हे खोल कर
मैं तुम्हारा स्वागत कर सकूँ।

मेरे हिस्से आई
ये अधखुली खिड़कियाँ
जिनसे मैंने केवल
तुम्हारा जाना देखा।

नाना-नानी

नाना हर बार पूछते
"बेटी काम कैसा चल रहा है?
सबके कंप्यूटर अलग-अलग है क्या?
बस से चली जाती है ना ठीक से ?"
और चुपचाप थमा देते हैं
मेरे हाथ में कुछ पैसे।

मैं ताज्जुब करती
उनकी चिंता देख।

बीते बरस फरवरी में
नाना से मिलने अस्पताल गई
और मैंने कहा आप घर आएँगे तब मैं
फिर आऊंगी आपसे मिलने।

एक दिन बाद
दोपहर को मालूम हुआ
नाना घर तो आए
पर नाना अब नहीं रहे।

कभी-कभी हमारा कहा हुआ
इस तरह हम-से आकर
टकराता है कि
हम स्तब्ध रह जाते हैं।

नानी का पूरा दिन
नाना के आगे पीछे ही था।
उनके बाद अब वो अपने दिन के साथ
खुद भी अन्दर से खाली हो चुकी हैं।

इसके बाद मिलने पर
नानी मुझसे सवाल करती हैं-
"बेटी काम कैसा चल रहा है?
सबके कंप्यूटर अलग-अलग है क्या ?
बस से चली जाती है ना ठीक से ?"
और चुपचाप थमा दिए
मेरे हाथ में कुछ पैसे।

नाना चले गए, पर थोड़े
नानी में बाक़ी रह गए।

नासमझ या समझदार

हमारे बीते हुए में हम पाते है
थोड़ा और नासमझ खुद को।
वर्तमान में खुद को थोड़ा
अधिक समझदार मान रहे हैं।
जबकि भविष्य में मानेंगे हम
आज भी नासमझ ख़ुद को।

दरअसल हम पूरे जीवन
नासमझ और समझदार
एक ही समय पर होते हैं।
बस इसे स्वीकारने का समय
हम अलग-अलग चुनते हैं।

स्मृतियाँ अवशेष है
जिन्हें कुरेद कर हम
बीता समय फिर जीना चाहते हैं।

पुरुष-भिन्न किरदार

कभी पिता होकर घर की छत बने
कभी प्रेम में रहकर फिर बच्चे बने।

कभी बेटा होकर सपनों से समझौता किया
कभी जिम्मेदारियों का बस्ता
उम्र से पहले कंधों पर लिया।

कभी लड़े जंग के मैदान में डटकर
कभी हार गए लड़ाई अपनों की ख़ातिर

कभी तेज़ बरसात में गाड़ी चलाते
कभी हॉस्पिटल में मरीज़ को दिन-रात संभालते।

कभी लाइनों में धक्के खाकर टिकट कटवाते
कभी बसों में अपनी सीट देकर घंटों खड़े रह जाते।

कभी चुपके-चुपके आँसू बहाते
कभी पूछ लेने पर फिर सब छिपा जाते।

इन पुरुषों ने निरंतर वे सभी ज़रूरी किरदार निभाए
जहाँ ज़रूरत थी, थककर कुछ देर बैठ जाने की।

खनिा बहुत बढ़िया बना है

उम्र छब्बीस में
सरकारी नौकरी की
तैयारी करता बेरोज़गार युवा
शाम को घर लौटकर खाने में
सबसे पहले निगलता है।

रिश्तेदारों के ताने
फिर दोस्तों से
मदद आने के बहाने।

घर में बढ़ता हुआ ख़र्चा
फिर मोहल्ले में उसकी
बेरोज़गारी का चर्चा।

अपने कुछ पुराने दु:ख
फिर प्राप्त ना हुए जो
अब तक वो सुख।

किसी के एहसानों में
दबने का चलन
फिर छोटों की लगी
नौकरी से जलन।

आत्मसम्मान पर लगा बैठकर
खाने का निशान
फिर निगला उसने
अपने अंदर का पुराना
खुश इंसान।

और अंत में निगलता है वो
रोटी का पहला निवाला
और फिर उदास
चेहरे से कहता
"खाना बहुत बढ़िया बना है"

दफ़्तर

जहाँ तक ना पहुँचें
ख़त किसी के
मैं उस शहर को
जाना चाहता हूँ।

जहाँ सुनाई न दें
ताने किसी के
मैं उस मोहल्ले में
जाना चाहता हूँ।

जहाँ मुझ तक न पहुँचें
कोई मसला
मैं उस गली में
बसना चाहता हूँ।

जहाँ ना हो,
फ़िक्र किसी की
मैं उस घर में
रहना चाहता हूँ।

और फिर ना आए फ़ोन किसी के
मैं ऐसे गायब होना चाहता हूँ।

हर रात इन ख्यालों में उलझा
मैं फिर थक कर सो जाता हूँ।

अगली सुबह यही ख़्याल दफ़ना कर
मैं फिर दफ़्तर को चला जाता पाता हूँ

हमारी दुनिया

एक उम्र के बाद
हमें पिता के संघर्ष
समझ आने लगते हैं।
और दिखने लगते हैं
उनके पाँव के छाले।
जब हम उनका जूता
पहनकर चलने लगते हैं।

एक उम्र के बाद,
हमें मालूम होता है कि
माँ भी कभी बच्ची थी
और दिखने लगते हैं
उनके बलिदान ।
जब दूसरे शहर में हम नौकरी करने लगते हैं।

एक उम्र के बाद,
हम जान जाते हैं कि
पिता की जेब
नीचे से सिली होती है
जिसमें पैसा सीमित होता है।
और सारे दिन घर के काम में पचती

माँ, मशीन नहीं होती।
उसका बदन भी
दर्द से टूट रहा होता है।

एक उम्र के बाद,
हम समझ जाते हैं कि
दुनिया संघर्ष, पैसे
और प्रेम से चलती है।
जबकि हमारी दुनिया
माँ-बाप से चलती है।

मेरे हिस्से आईं

तुम्हारे शहर से होकर
गुज़री है ये रेलगाड़ी।
बीच स्टेशन पर रुकी भी थी
पर मैं वहाँ उतरा नहीं।

क्योंकि मेरे हिस्से
कभी नहीं आया
तुम्हारा मुझे
स्टेशन पर लेने आना।

मेरे हिस्से आईं तो
ये तमाम रेलगाड़ियाँ
जो गुज़र जाती हैं बस
एक तुम्हारे शहर से होकर।

हम बदलने लगते हैं

एक उम्र के बाद हमें,
भागने से ज्यादा
कहीं रुकना अच्छा लगता है।

गति से ज्यादा
ठहराव प्रिय लगता है।
दुनिया घूमने से ज्यादा
घर में रहना ज़रूरी लगता है।

किसी के आगे कहने से ज्यात
चुप रहना ठीक लगता है।
सब कुछ पा लेने से ज्यादा
जो है उसे बचाना सही लगता है।

बाहर के शोर से ज्यादा
भीतर का मौन सुनाई देने लगता है।
नए गानों से ज्यादा
पुराने गाने समझ आने लगते हैं।

चमक से ज्यादा
सरलता, प्रभावित करने लगती है।
और अंत में आकर्षण के बजाय
प्रेम, प्राथमिक लगने लगता है।

एक उम्र के बाद,
हम बदलने लगते हैं
नए की जगह
थोड़े पुराने होने लगते हैं।

अवसादों में जीवन

इन दिनों मेरा कमरा
अवसादों से भरा पड़ा है।

एक कोने में
कुर्सी पर पड़े हैं
तुम्हारी चुप्पी के अवसाद ।

वहीं मेज़ पर बिखरे हैं
नौकरी की चिंता के अवसाद।

पंखे से झूल रहे हैं
अर्ध पड़े सपनों के अवसाद।

जिसके ठीक नीचे
बिस्तर पर फैला है।
अवसादों में लिपटा मेरा शरीर।

ये कुर्सी, मेज़, बिस्तर,
कमरा और मेरा जीवन
बीत रहा है इन्हीं
अवसादों के बीचों-बीच।

अच्छा सुनो,
तुम आकर, किवाड़ खोल
झटक डालो ये कुर्सी

खाली कर दो कमरे को
और खींच कर जकड़ लो मुझे
फिर झाड़ दो ये सारे अवसाद।

जैसे झाड़ देते हैं, धूल
हम महीनों बंद पड़ी
किसी किताब पर से।

अतीत के जाले

आखिर कितने बरस लगते हैं
एक बरस से बाहर आने में?
कोसों दूर फैले सन्नाटे में
जब एक तेज तर्रार ध्वनि
कानों में सन्न से प्रवेश करती है।

फिर अतीत के जाले रह-रह कर
और चमकने लगते हैं।

ये ध्वनि हो सकती है बरसों बाद
टेलीफ़ोन पर सुनी किसी की आवाज़ ।
घर की देहली पर आवाज़ देता
कोई पुराना मित्र या
किसी अनजान शहर में
हाल पूछता कोई रिश्तेदार।

मैं इन दिनों
इस बात से हैरान हूँ कि
बीते बरस से
कुछ लोग ही साथ आ पाए हैं।

कुछ से मैंने स्वयं विदा ली थी और
कुछ ने मुझे अपने हिस्से की विदा दिए
बिना चुपचाप ही अपना घेराव
मेरे आस-पास से हटा लिया।

खैर, संबंध बनते मिटते रहते हैं।
अंततः साथ वही रहते हैं
जो वास्तव में आपके लिए होते हैं।

तुम्हारे प्रेम में

तुम्हारे प्रेम में
मैं कोई विद्रोह नहीं कर सकती।
ना ही मैं बनवा सकती हूँ
कोई स्मारक हमारे प्रेम का।

हाँ, इतना वादा
ज़रूर कर सकती हूँ कि
जब भी इस दौड़ती-भागती जिंदगी से
हताश होकर तुम बैठ जाओ कहीं
मैं भी ठहर जाऊँगी
तुम्हारा हाथ थाम कर वहीं
ठीक तुम्हारे साथ ही।

और तब तक
तुम्हारे साथ बनी रहूँगी।
जब तक तुम्हें खुद से
प्रेम करना न सिखा दूँ
क्योंकि मेरी नज़र में
प्रेम में स्मारक बनवाने से
ज्यादा बड़ी बात है किसी को
ख़ुद से प्रेम करना सिखा देना।

प्रेम सबके हिस्से

कहीं बनी फिल्में
किसी की सफल प्रेम कहानी पर
तो कहीं किसी ने बदल लिया
किरदार अपना।

कहीं लिखी गई
प्रेम कविताएँ
जीवन्त मान कर
तो कहीं जला दिए
किसी के लिखे प्रेमपत्र भी।

कहीं बनाए गए
सुंदर स्मारक, प्रेम में
तो कहीं किसी ने उजाड़ दिए
दो चिड़ियों के घोंसले भी।

कहीं छेड़ी गई जंग
अपने प्रेम को पाने के लिए
तो कोई देखता रह गया
किसी को डोली में विदा होते हुए।

कहीं खाई गई क़समें
प्रेम में साथ जीने की
तो कोई झूल गया पंखे से
अधूरे प्रेम की खातिर

प्रेम, सबके हिस्से आया ज़रूर
परन्तु कहीं स्थाई बन कर
तो कहीं स्मृति बन कर।

धुंधली स्मृतियाँ
मिट चुकी स्मृतियों से
अधिक कष्टदाई होती हैं।

यहाँ इस घर से जाते हुए

यहाँ इस घर से जाते हुए
आख़िर में याद आएगा तुम्हें
सबसे पहले छूटा सामान ।
आख़िर में तुम ढूँढोगी
दूसरे शहर में कोई मकान।

आख़िर में तुम देखोगी
फ्रिज में सड़ चुकी हैं सब्जियाँ सारी।
आख़िर में तुम संभालोगी
बक्से में रखी वो नई साड़ी।

आख़िर में तुम भागोगी और
बंद करोगी गैस पर दूध।
आख़िर में तुम लोगी
फिर अपने बिखरे बालों की सुध।

आख़िर में तुम झुंझुलाओगी
इस घर से जाने पर
आख़िर में तुम्हें जाना होगा

फिर यहाँ इस घर से जाए हुए
आख़िर में तुम्हें याद आएगा
जाते-जाते गले मिलना
और आख़िर में मैं कहूँगा-
"सुनो! फिर दोबारा जल्द मिलना"

कुछ लड़कियाँ

कहीं देहरी पार नहीं कर पा रही कुछ लड़कियाँ
कहीं हवाईजहाज भी उड़ा रही कुछ लड़कियाँ।
कहीं दूसरे की गलती पर भी सुनती हैं कुछ लड़कियाँ
कहीं वक्ता बन कर सबको सुनाती कुछ लड़कियाँ।

कहीं कलुषित बता दी जाती कुछ लड़कियाँ
कहीं दूषित को भी अपनाती कुछ लड़कियाँ।
कहीं डर से घर बैठा दी जाती कुछ लड़कियाँ
कहीं दर खुद छोड़ आती कुछ लड़कियाँ।

कहीं समाज दूषित कह देता कुछ लड़कियाँ
कहीं समाज का बहिष्कार करती कुछ लड़कियाँ।
कहीं अपशगुनी का कलंक ढोती कुछ लड़कियाँ
कहीं अवगुण को गुण में बदल देती कुछ लड़कियाँ।

कहीं केवल घर संभालती कुछ लड़कियाँ
कहीं घर संभाल, दफ़्तर जाती कुछ लड़कियाँ।
कहीं दामन में दाग़ छिपाती कुछ लड़कियाँ।
कहीं दाग़ को भी खाक कर जाती कुछ लड़कियाँ।

कुछ लड़कियाँ दे जाती हैं, कई सीख
हम सी ना बने कभी बची हुई लड़कियाँ।
कुछ लड़कियाँ सीखती और चाहती हैं
बने निडर, अब सभी डरी हुई लड़कियाँ।

घर-मकान

कितना कुछ छोड़ना पड़ता है
एक मकान छोड़ने से पहले।
छोड़ना पड़ जाता है
उसकी छत के नीचे बीता
अपना सारा बचपन ।
जिसकी दीवारों पर
छोटे भाई ने बनाई थी
कुछ अतरंगी तस्वीरें।

वो आँगन, जहाँ मैंने
चलना सीखा था,
जिसकी खिड़की से, माँ
पिताजी को आते देखती थी।

इतना सब पीछे छोड़ जाने पर
मैंने जाना,
आदमी मकान खरीद सकता है
लेकिन उसे घर बनाने में
एक पूरा जीवन बीत जाता है।
घर की दीवारों तक से प्रेम हो जाता है।

अंत में मैंने समझा बस इतना कि
अपना पूरा घर छोड़ना पड़ता है
एक मकान छोड़ने से ठीक पहले।

बचपन

एक, गुब्बारे खरीद रहा था।
एक, गुब्बारे बेच रहा था।

कच्ची उम्र दोनों की
लगभग बराबर सी थी।
एक बचपन जी रहा था
एक बचपन बेच रहा था।

अबोध उम्र में बच्चे

एक पूरा दशक बीत जाने पर हम जानेंगे
आँगन के उस वृक्ष का महत्व
जब उसकी छाँव में बैठा करेंगे।

वैसे ही अबोध उम्र में
माँ-बाप पर चीखते बच्चे जानेंगे
एक दशक बाद उनका महत्व
जब पाएंगे ख़ुद को उनकी जगह पर।

माँ

माँ, ज्यादा पढ़-लिख नहीं पाई
उसे नहीं पता
गणित का फॉर्मूला कोई।

माँ, कभी नया शहर नहीं घूमी
ना ही उसे ज्ञान है
भूगोल शास्त्र का।

माँ, कहीं बाहर काम पर
नहीं जाती
ना ही आता है है उन्हें
ठीक-ठीक हिसाब करना।

पर इन चारदीवारी के बीच रह कर
माँ ने ही सिखाया मुझे
अपनी क्षमताओं से अधिक
कार्य करने का फॉर्मूला

खुद घर में रह कर भी
सिखाया मुझे
स्वतंत्र होकर दुनिया देखना
और सिखाया हिसाब
अपने दुःखों का हाथ पकड़ कर
चलते हुए वास्तव में सुख खोजना।

कच्चा रास्ता

अभागे हैं वे लोग
जो गए थे
कुछ दिन के लिए शहर।

और फिर लौट न पाए
कभी उस जगह।
जहाँ छोड़ गए थे
अपना बचपन।

पिता के झुके कंधे और
माँ की आँखों में
प्रतीक्षा का भाव।

जिन्हें लौटना था
फिर उस जगह
जहाँ से वे निकले थे
भविष्य बदलने की उम्मीद लेकर।

अफ़सोस,
शहर जाने को सड़कें मिलती रही।
पर गाँव लौटने को
कच्चा रास्ता भी न बचा।

पिता

बेटी की आड़ी-तिरछी
चोटी भी बाँध देते हैं।
कभी उसके लिए
जली रोटी भी बना देते हैं।

कई बार कॉपी पर
कवर भी चढ़ा देते हैं।
स्कूल का होमवर्क भी
करवा देते हैं।

बिना पत्नी के
पुरुष पति नहीं हो पाते।
पर पिता होते हुए
वे माँ ज़रूर हो जाते हैं।

जैसे-जैसे पितृसत्ता
आगे बढ़ती जा रही है।
पीढ़ी-दर-पीढ़ी
पिता अब थोड़े-थोड़े
माँ होते जा रहे हैं।

कहानी

कभी धुन सुनाई देती है
कभी कुढ़न सुनाई पड़ती है
कभी फूलों की चादर आती है
कभी काँटों की रजाई अड़ती है।

एक ज़मीन खिसकती है पैरो तले तो
कभी सोच रौंद दी जाती है एक हूक छिपी है मन के तले तो
कभी उदासी बाँट दी जाती है।

एक चिंगारी सी जलती है
फिर वही बुझा दी जाती है
एक बात कहीं से निकलती है
फिर कहीं और सुना दी जाती है।

कोई खाना पचाने को भागता है
तो कोई खाने के लिए पचता है
कोई किसी के जीवन का चक्का चलाता है
तो कोई चक्के पर सूत काटता है।

किसी के सर छत नहीं
तो कोई चौमंज़िल में भी अकेला है
किसी के पढ़े ख़त कहीं
तो कोई चेहरा भी अब धुंधला है।

यहाँ सबकी अपनी कहानी है
यहाँ हर किसी की कोई कुर्बानी है
यहाँ सब अपने आपको विजेता चाहते हैं
यहाँ हार किसी ने नहीं मानी है।

कोई कहता है किसी को अपशगुन यहाँ
तो कोई देखता है छोटा सा गुण भी
हैं सब अपनी फिल्म के हीरो यहाँ
तो किसी की नज़र में ज़ीरो भी।

ये धरा है प्रिय यहाँ कोई सर्वगुण संपन्न नहीं
यहाँ सबकी अपनी मनमानी है
यहाँ कोई किसी से कम नहीं
यहाँ सबके पास एक कहानी है।

हम अपनी कहानी जी रहें हैं
और यही बस हमें जीनी है
यहाँ किसी की कहानी ग़लत नहीं
बस यही बात हमें सीखनी है।

तुम्हें सिर्फ़ मेरा बीता हुआ कल हैरान करता है
फिर तो तुम्हें मेरा आज भी मालूम होना चाहिए।

तुम्हें भुला देने के क्रम में

यदि कभी ऐसे क्षण आए
जहाँ मैं तुम्हें भूलना चाहता हूँ।
तब तुम्हें भुला देने के क्रम में
सबसे पहले, मैं भूलना चाहूँगा।

तुम्हारा स्पर्श,
जो आज भी
मेरे हाथों में मौजूद है।

तुम्हारी आँखें,
जो अब भी मेरी ओर
एकटक देखती रहती हैं।

तुम्हारा चेहरा,
जो धुंधला नहीं होता
तुमसे बहुत दूर जाने के बाद भी।

तुम्हारी मुस्कान
जो छपी है मेरे मन पर और
मिटती नहीं है फिर मेरे रोने पर भी।

तुम्हारी वे सभी बातें
जो मैं तुम्हारे जाने के बाद
दोहराता हूँ फिर अपने आगे।

वो प्रथम आलिंगन
जो बिखरा है मेरे जीवन में
महकता हुआ।

और फिर अंत में मैं भूलना चाहूँगा
ऐसे तमाम क्षणों को
जहाँ मैं मैं ये सोचूँ-
मैं तुम्हें भूलना चाहता हूँ।

अतीत से भविष्य तक

देह भटकती है दिन भर
कभी दफ़्तर,
कभी घर,
तो कभी किसी और दर।

मन घूमता है आठ प्रहर
अतीत से भविष्य तक
वर्तमान से होकर।

एक दिन

एक दिन आज का कठिन भी
एक दम सरल हो जाएगा।
एक दिन कठोर पड़ा दुःख भी
बिल्कुल तरल हो जाएगा।

एक दिन सब अनजान भी
हमारे जानने वाले होंगे।
एक दिन दुनिया की इकाई में
हमारा भी नाम हो जाएगा।

एक दिन उस ऊँचाई पर पहुँचेंगे
जिसकी सीढ़ी पर हम आज हैं।
एक दिन बनेंगे ठीक से जो भी
हमारे बिगड़ते काज हैं।

एक दिन हमारी सभी कमियाँ
बौनी हो जाएँगी।
एक दिन हम कहेंगे कि
कल से बेहतर हमारा आज है।

उस रोज़ साथ बैठ हम
खूब हसेंगे अपनी नादानियों पर।
उस रोज़ नहीं टसकेंगे हम
अपनी की बचकनियों पर।

उस रोज़ हम समझ जाएँगे
बड़े होने में एक उम्र लगती है।
उस रोज़ हम नहीं उकताएँगे
दूसरों की कहानियों पर।

उस रोज़ हम टेक लगा कर बैठेंगे
एक-दूसरे की पीठ से
उस रोज़ फिर दिल भर लेंगे हम
किशोर-दा के प्रेम गीत से।

उस रोज़ अपने सभी दुःख हम भुला देंगे
और भर लेंगे अपना जीवन
एक-दूसरे की प्रीत से।

अंतिम विदा

मैं उन सभी लोगों से दोबारा मिला
जिनके जीवन से मैं कभी
अकारण यूँ ही चला आया।
उनसे मिला
कुछ देर बात की
और फिर उन्हें अंतिम बार
गले लगा कर विदा किया।

जब तुम मेरे जीवन से
यूँ ही अकारण चले गए
तब मुझे महसूस हुआ कि
किसी के जीवन से जाने से पहले
एक अंतिम बार उन्हें मिल कर
गले लगाना अनिवार्य हो जाना चाहिए।

बहुत की परिभाषा

बहुत कुछ कह देने पर भी
कुछ बचा रह जाता है।

बहुत दूर तक चलने पर भी
हम कहीं पहुँच नहीं पाते।

बहुत हँसने पर भी एक उदासी
कहीं तो डेरा डाले बैठी होती हैं।

बहुत देखने पर भी वो नहीं दिखता
जो हम देखना चाहते हैं।

ये "बहुत" की परिभाषा
किसने निश्चित की और
कौन तय करता है
बहुत के हिस्से आने वाला माप ?

कई बार हमारा बहुत भी
थोड़ा हो सकता है
जिसमें थोड़ा और जोड़ देने पर
शायद हो सकता है सब कुछ सार्थक।

ऐसा ज़रूरी तो नहीं

मेरे हिस्से तक आते-आते
सभी फूल सूख गए
जिन्हें आना था उम्र भर के लिए माना था

वे लौट गए किसी शाम, उल्टे पाँव
जब चलना था मुझे
अपने सपनों का हाथ पकड़कर
तब लाद दिया गया
जिम्मेदारियों का बस्ता
इन कंधों पर।

कभी-कभी जो जितना
साथ चलना शुरू करें
वह जीवन भर
उतना ही साथ चलता रहे
ऐसा ज़रूरी तो नहीं !

मौन

इस बात को स्वीकार लेना कि
"अब मौन रहना ही मेरी उदासियों का हल है"

इस स्वीकृति ने मारे हैं
न जाने कितने व्यक्ति
अपने ही अंदर।

हमारी पीढ़ी मरी हैं
ज़िंदा रह कर भी।

जहाँ प्रतीक्षा थी
उन्हें भी कोई पुकारेगा
उतारेगा उनके मन का भार।

दुखद, उन्हीं नाजुक क्षणों में हमने चुना
कहने की जगह मौन रह जाना।

पीले पड़े दुःख

मैंने अपने सबसे हरे या नए दुःख
कभी एक दम से नहीं लिखे।
मैंने प्रतीक्षा की उनके पीले पड़ जाने की।

यहाँ जितने अंकित बखान हैं
सब पीले पड़ चुके हैं।
जैसे पीली पड़ जाती है
सड़ जाने पर कोई पुरानी पत्ती।

ये पुराने दुःख तब यहाँ दर्ज हुए
जब इनसे मन का एक कोना
ऊब चुका था या ये मुझ पर
अब कम असर कर रहे थे।

एक बात सीधी सटीक बैठती है
इन हरे से पीले पड़ते
दुःखों की यात्रा में कि
मेरी इन्हें ज़ाहिर करने की गति
समय की गति से लगभग एक-तिहाई है।

समय बीतता है
दुःख पीला पड़ता है और
आख़िर में मुझे लगता है कि
हमारे दुःख बहुत निजी हैं।
मैं कभी उस समय नहीं कह पाऊँगी
जब मुझे सुने जाने की
सबसे ज्यादा ज़रूरत होगी।
मुझे दुःख है इस बात का।

इच्छाएँ

क्या तुमने कभी सोचा है
जिस रोज़ अचानक हमारी सभी
अधूरी पड़ी इच्छाएँ पूरी हो जाएँगी
उसके सके बाद क्या होगा ?

क्या फिर जीते रहने में
वही स्वाद रहेगा ?
क्या फिर कुछ पा लेना ही
अंत कहलाएगा ?

मुझे लगता है
हमारी कुछ इच्छाएँ
इसलिए भी अधूरी रह जाती हैं
ताकि हम जीने की इच्छा को
मरते हुए ना देख सकें।

कोई भी घटना घट सकती है

बहुत सुंदर दिखने वाली मुस्कान भी
कभी तस्वीरों में झूठी हो सकती है।
किसी की बहुत चमकती आँखें भी
अभी-अभी रोई हो सकती हैं।

बहुत ऊँचाइयों पर चढ़ा व्यक्ति भी
कभी गिरा हो सकता है।
किसी का बहुत कुछ कह देना भी
उसके भीतर का मौन हो सकता है।

हो सकता है किसी वसन्त का
बीते दिनों में पतझड़ होना।
कोई भी संभव घटना घट सकती है
किसी भी सुंदर परिणाम के
सामने आने से ठीक पहले।

अगर कोई तुम्हारी प्रतीक्षा में नहीं है
तो तुम्हारा उस जगह लौटना व्यर्थ है।

दुख पूछना

एक ओर दफ़्तर के लिए देरी हो रही थी
दूसरी ओर माँ की आँखों से
आँसू बस छलकने ही वाले थे।

असमंजस में था वो,
सांत्वना देने रुके या
पगार की कटौती से बचे।

रोने का कारण
माँ ने आर्थिक स्थिति बताया
इसके आगे वह बिना कुछ सुने ही
दफ़्तर को चला गया।

इस वाक़िये ने मुझे हैरान नहीं किया
न ही मैंने उसे निर्दयी माना
क्योंकि सबने देखा उसका आँसू न पोंछना
परन्तु मैंने देखा उसका दौड़-भाग करना
फिर कहीं अगले महीने
माँ को आर्थिक तंगी के चलते
यूँ ही रोना ना पड़ जाए।

आँसू पोंछे जा सकते हैं
लेकिन किसी का दुःख पोंछना
आँसू पोंछने से ज़्यादा बड़ी बात है।

प्रेम के नायक

मैं अचानक उस रोज़
मरना पसंद करूँगी।

जब मुझे ज्ञात होगा कि
इस दुनिया के सभी प्रेमपत्र
फूल आदि नष्ट कर दिए गए हैं
किसी खलनायक के हाथों।

उसने नहीं छोड़ा है पुराने प्रेम का
एक भी साक्षात्कार इस संसार में।

प्रेम सभी के जीवन में
किसी न किसी रूप में
बचा रहना चाहिए।

कुछ प्रेम कहानियाँ या कविताएँ
जो अभी लिखी जानी बाक़ी हैं
उन सभी में इन साक्ष्यों को
नायक घोषित कर
हम सभी को टेक देने चाहिए
प्रेम के आगे अपने घुटने,
क्योंकि जब किसी को
कंधे के सहारे की ज़रूरत होती है
तब काम नहीं आता कुछ।
हमारा हृदय खोजता है केवल प्रेम।

इस स्थिति में यदि कोई मनुष्य
जब हमारे साथ नहीं होगा।
तब ये सभी नायक बनेंगे हमारा कंधा
हमारे प्रेम को सहारा देने के लिए।
उसे अनंतकाल तक जीवित रखने के लिए।

ठहराव

एक पूरा जीवन
लुटाया जा सकता है
प्रेम की तलाश में।

एक प्रेमी तो ठहराव बन कर
सबके हिस्से आना चाहिए।

सामान्य गतिविधियाँ

तुम्हारी अधिकांश तस्वीरें बटोर लेने पर भी
मेरा और एक तस्वीर लेने का मोह नहीं छूटता।
मेरे कई बार मना करने पर भी
तुम मेरे लिए खाना लाना नहीं भूलती।

बाक़ी दुनिया के लिए
ये दोनो घटनाएँ मात्र गतिविधियाँ हैं।
पर हम दोनों के लिए
ये घटनाएँ प्रतिदिन की सबसे सुखद घटना है।

नया शहर

ये शहर कितना सूना है
यहाँ अब गोरैया नहीं दिखती
यहाँ अब कोई चिट्ठी भी नहीं भेजता।
इसलिए कोई प्रतीक्षा करता नहीं दिखता
ऊँची इमारतों ने ढका है आसमान यहाँ
इसलिए कोई अब तारों की गिनती भी नहीं करता।

यहाँ बंद घरों में खिड़कियाँ कम हैं
इसलिए कोई किसी की राह नहीं देखता।

कितना कुछ था हमारे पास
इस जगह को सुंदर बनाने के लिए
इतना कुछ हमने खो दिया
इस जगह को शहर बनाने के लिए।

छोड़ा गया व्यक्ति

प्रतीक्षा में में छोड़ दिया गया हर व्यक्ति
लौटने पर हमेशा वापस नहीं मिलता।

मिला भी तो जैसा छोड़ा गया
ठीक वैसा नहीं मिलता।

प्रतीक्षा

प्रतीक्षा, कभी छोड़े गए के अपनाने की।
कभी किसी को छोड़ जाने की।
कभी रेलगाड़ी के समय पर आने की।
कभी रेलगाड़ी ही छूट जाने की।
कभी भूली बातों के याद आने की।
कभी जो याद है उसे ही भूल जाने की।
कभी सुंदर पलों के ठहर जाने की।
कभी काटते समय के कट जाने की।
कभी पुराने मित्र से कहीं टकराने की।
कभी बचते हुए चुपचाप निकल जाने की।
कभी किसी के वापस आने की।
कभी-कभी अपने ही लौट आने की।

प्रतीक्षा,
कभी कुछ समाप्त हो जाने की।
कभी निरंतर बस चलते जाने की।

छाप

सपने अपना रंग छोड़ते हैं
जैसे स्याही छोड़ता है
कोई पत्र भीग जाने पर।

एक गहरी नींद के बाद
जब तुम्हें अपने सामने नहीं पाता है
तब जागने के बाद भी
घंटों उस सपने में रह जाता है।

वहाँ तुम्हारे ना होने में भी
तुम्हारा होना जीता हूँ।
और फिर यूँ अकेले होकर भी मैं
तुम्हारे साथ अपना दिन बांटता हूँ।

इसलिए मैं कहता हूँ कि
सपने अपना रंग छोड़ते हैं।

जैसे रंग छोड़ती है, धोने पर
तुम्हारी कॉटन की वो लाल साड़ी।
जैसे दूर जाने पर तुम्हारी बातें
मेरे मन पर अपनी छाप छोड़ती हैं।

आख़िरी घटना

अंतिम बात अभी कही जानी बाक़ी है।
अंतिम विदा अभी ली जानी बाक़ी है।
अंतिम आलिंगन अभी बचा हुआ है,
अंतिम संवाद अभी होना बाक़ी है। तिम संवाद

किसी भी घटना को
तब तक आख़िरी नहीं माना जा सकता
जब तक उसके घटने की उम्मीद बाक़ी है।
ऐसी उम्मीद का अंत होना आख़िरी घटना होगी
तो इस उम्मीद का अभी शून्य होना बाक़ी है।

प्रेम-झूठ का पात्र

कभी-कभी प्रेम भी
झूठ का पात्र बन जाता है।

उदाहरण के लिए
बच्चे को खाना परोसती माँ
पतीले में रखी
आख़िरी रोटी देख कर
झुठला देती है अपनी भूख।

वास्तव में इस तरह के झूठ
जिससे बचा हुआ प्रेम,
बढ़ता हुआ प्रेम बन जाता है।
ऐसे ही झूठ कभी-कभी
अनिवार्य हो जाते हैं
इस दुनिया में प्रेम को
जीवित रखने के लिए।

आज में कल

और जिस क्षण तुम्हे महसूस होगा
कि हो चुका है सब तहस-नहस,
नहीं बचा अब कुछ भी बचाने को।

तब भी बचा रहेगा तुम्हारा “आज”
इस संसार में तुम्हारा “कल” बचाने को।

एक संभावना

एक संभावना ये भी है कि
जिसकी प्रतीक्षा में तुम यहाँ रुके हो
वो तुम्हारी प्रतीक्षा में वहाँ खड़ा हो।

बात बस कदम बढ़ाने की हो
और बात बस
बात शुरू करने पर ही रुकी हो।

क्षणिकाएँ

किराए के मकानों में
गमले लगाए जा सकते हैं
पेड़ नहीं उगाये जा सकते।

यानी किराए के मकान
सजाए जा सकते हैं
घर नहीं बनाए जा सकते।

2.

कुछ लड़के
जब खुलकर रो नहीं सकते
तब निकल जाते हैं सैर पर
अपने दुःखों का हाथ पकड़ कर।

और फिर लौटते हैं
अपने होठों पर
एक सुंदर मुस्कान लेकर।

3.

महीनों तक हम घर छोड़
दूसरे शहर बसने का मन बना रहे थे।
पर उस क्षण को आते ही
अब पाँव फिर उल्टे दौड़े जा रहे थे।

4.

ग्रहस्थ जीवन
बड़ा कठिन है स्त्री।
मायके की विपत्ति
ससुराल में आपत्ति हो जाती है
जबकि ससुराल की विपत्ति
मायके की अपनी परिस्थिति बन जाती है।

5.

गीत, तब तक अपने नहीं लगते
जब तक उसके बोल में आपबीती न दिखे।
मतलब ये कि सुना हुआ गीत भी
जिया हुआ है पहले किसी व्यक्ति द्वारा।

6.

मैं उस बेनाम चिट्ठी सा हो गया हूँ
जिसे बस लिख कर छोड़ दिया गया है
बिना तुम्हारे पते पर भेजे।

7.

बाद तुम्हारे जाने के
हम देर तक बैठे रहे इन्तज़ार में
यकीं बड़ी देर से आता है
किसी के छोड़ जाने का।

8.

कुछ नया पाने की लालसा पर
सदैव भारी रही है छूट गए की याद।

9.

कहीं दूसरे शहर में बस जाने की
लालसा पूरी होने पर भी
एक रोज़ खींच ही लाती है, इस शहर
फिर अपने घर की याद कभी।

10.

आकर्षण गति पकड़ता है और क्षण भर क्षणभर टिकता है
प्रेम आहिस्ता सरकता है और उम्र भर ठहरता है।

11.

तुम्हें देखना, मिलना,
छूना और बात है।
इन सबको केवल सोचना
और बात।

12.

सबके हिस्से एक-सा आसमान है
सबके पास एक-सी रात नहीं।

13.

और अंत में कभी किसी व्यक्ति
या जगह से इतना दूर मत जाना कि
लौटने का विकल्प शेष ना रह जाए।

14.

असल में हम सब खुद
अपनी-अपनी कहानियों में व्यस्त हैं।
किसी से मिलना,
फिर ये कहकर टाल देते हैं कि
उनके पास समय नहीं है।

15.

जब हमारा जिया हुआ
खाली समय में
हमसे टकराना बंद कर दे
तब महसूस होता है कि
सदा जीवित रहने वाली स्मृतियाँ भी
एक रोज़ धुंधली हो ही जाती है।

प्रतीक्षा की देह नहीं होती
फिर भी पसरी दिख जाती है
पार्क की किसी खाली बेंच पर।

17.

तुमसे दूर जाना यकीनन बुरा है
मगर तुम्हारा, मुझे न रोकना
उससे भी ज़्यादा बुरा है।

18.

जिन गलियों में आजकल बच्चे नहीं खेलते
वे गलियाँ विकसित ज़रूर हुई हैं
लेकिन उतनी ही वृद्ध हो चली हैं।

उनका बचपन
विकास के चलते समय से
पहले ही बूढ़ा हो चुका है।

19.

तुम्हारा बहुत समय बाद घर लौटना
और अचानक मेरी सभी अधूरी पड़ी
कविताओं का पूरा हो जाना
दोनों एक ही तो बात है।

20.

ये खाली घर चीखता है
तुम्हारी अनुपस्थिति में
पर अच्छा तो ये होता कि तुम
चीखती मुझ पर घर देरी से आने में।

और अंत में उतना भी
नहीं बचेगा जीवन
जिसमें तुम मिल पाओ
उन सभी ज़रूरी लोगों से

जिनसे मिलना
आज टालकर छोड़ रहे हो
तुम कल के भरोसे।

जा चुके लोगों का हमसे दूर जाना
इतना ज़रूरी था क्या ?
जा रहे लोगों से ये ज़रूर पूछना
"जाना ज़रूरी है क्या..?"



ऐश्वर्या शर्मा, जयपुर, राजस्थान की निवासी हैं, इन्होंने अपनी शिक्षा इसी शहर से पूरी की और वर्तमान में वहीं कार्यरत हैं। उन्होंने लगभग चार से पाँच वर्ष पहले हिंदी लेखन की यात्रा शुरू की थी। लेखन उनके लिए भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम रहा है। इनकी पहली पुस्तक 'जाना ज़रूरी है क्या!' है, इसमें इन्होंने अपने अनुभवों और भावनाओं को पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

Poetry Collection / कविता-संग्रह

पंक्ति प्रकाशन

9 788198 133601

मूल्य ₹ 225